तरीक़ए फ़ातिहा

ज़िबह का बयान

क़ुर्बानी

अक़ीक़ा के मसाइल

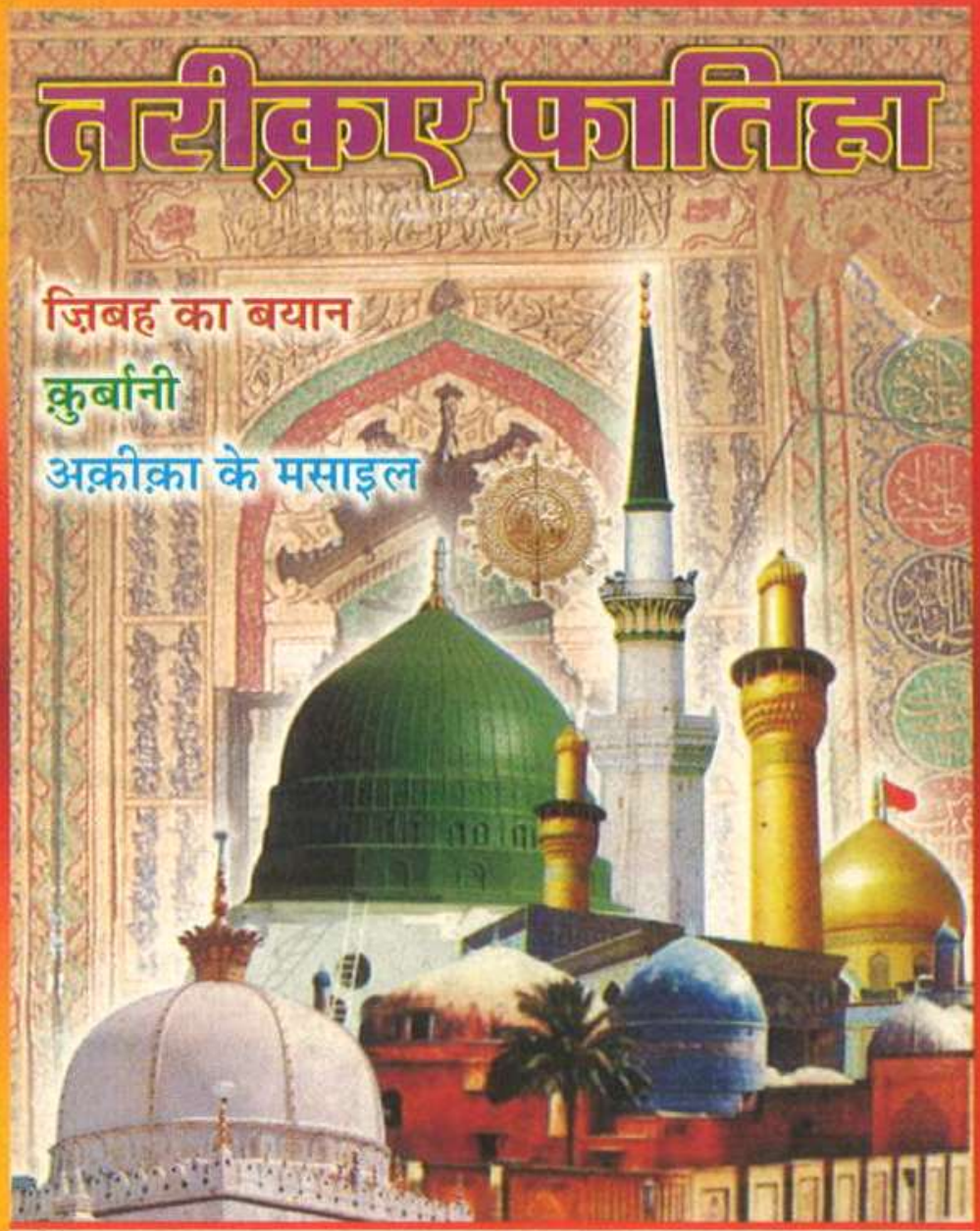

अल-कुरआन कम्पनी

कमानी गेट, दरगाह शरीफ़, अजमेर Mobile : 94143-54902

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तरीक़ए फ़ातिहा

ज़िबह का बयान

क़ुर्बानी

अक़ीक़ा के मसाइल

अल-क़ुरान कम्पनी
कमानी गेट, दरगाह शरीफ़, अजमेर

शरायत व आदाब फ़ातेहा

हलाल और पाक चीज़ों पर फ़ातेहा देना चाहिए। जूठी चीज़ न हो, साफ़ सुथरी हो। लोगों के दिखाने और अपनी तारीफ़ की ग़र्ज़ से न हो। कच्ची प्याज़ और लहसुन और हराम व नशा की चीज़ न हो। फ़ातेहा की चीज़ें सड़ी गली और नापसन्द न हों। ख़ुशबूदार पाक चीज़ों का लिहाज़ रखा जाए वरना इस फ़ातेहा का का कोई फ़ायदा न होगा। बल्कि उल्टा गुनाह होगा। और ऐसी दुकान से फ़ातेहा के लिए मिठाई न ख़रीदी जाए जो पाकीज़गी में मशकूक हो या जिस दुकानदार के अतवार व आमाल को देख सुनकर कराहत महसूस हो।

बेहतर यह है कि अपने घर में फ़ातेहा की चीज़ें पकाई जाएं। क्योंकि घर की चीज़ों में एहतियात बहुत ज़्यादा होती है और घर में न पका सकें तो बदरजा मजबूरी किसी पाकीज़ा दुकान से ख़रीद कर फ़ातेहा दिलावें। और ऐसी चीज़ों पर फ़ातेहा दिलाएं जो पसन्दीदा हों, जो कि ज़ैल में दर्ज हैं-

अशयाऐ फ़ातेहा
(फ़ातेह की चीज़ें)

हलवा, मिठाई, खीर और वह चीज़ जिसमें शक्कर पड़ी हुई हो। क्योंकि हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया

है कि मोमिन मीठे हैं और मीठी चीज़ों को पसन्द करते हैं। और क़ुरान मजीद में है जिसका तर्जुमा यह है- हरगिज़ भलाई को नहीं पहुंच सकोगे जब तक कि ख़ुदा के रास्ते में महबूब चीज़ों को सर्फ़ न करो और उससे ज़्यादा कौनसी चीज़ महबूब होगी जिसको रसूले ख़ुदा सल्लल लाहो अलैहे वसल्लम ने महबूब रखा हो। इसी तरह गोश्त पर फ़ातेहा देना है। क्योंकि हज़रत सल्लल लाहो अलैहे वसल्लम ने गोश्त को बहुत पसन्द फ़रमाया है। और मीठे नए फल, शहद, शरबत, दूध, पुलाव, ज़रदा ग़र्ज़ कि जितनी भी अच्छी और लज़ीज़ चीज़ें हैं सब पर फ़ातेहा दुरुस्त है। लेकिन मीठी चीज़ें सबसे बेहतर हैं। फ़ातेहा दिलाने का तरीक़ा

सुल्फ़ सालेहीन और बुज़ुर्गाने दीन का है उसी तरकीब से फ़ातेहा दिलाना चाहिए।

तरीक़ा-ए-फ़ातेहा

फ़ातेहा यूं देना चाहिए कि पाक जगह पर जानमाज़ बिछाकर बावुज़ू क़िबला रू दो ज़ानों बैठें और जिस चीज़ पर फ़ातेहा देना हो उसको सामने रखें, अगर वह चीज़ ढकी हो तो उसको खोल दें। एक बरतन में पानी भी रखें और लोबान या अगरबत्ती सुलगाएं। **अऊज़ो बिल्लाहे मिनश्शैतानिर्रजीम** और **बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम** पढ़कर यह पढ़ें-

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

ला यस्तवी अस्हाबुन्नारे व अस्हाबुल जन्नह अस्हाबुल जन्नति हुमुल फ़ाएज़ून0 लव अनज़लना हाज़ल क़ुरआ-न अला ज-ब-लिल ल-र अय-तहू ख़ाशिअम मु-त-सद्दिअम मिन ख़श-यतिल्लाहि व तिलकल अमसालो नदरिबुहा लिन्नासि ल-अल-ल-हुम य-त-फक्करून0 हुवल्लाहुल लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व आलेमुल ग़यबि वश-शहादति हुवर्रहमानुर रहीम0 हुवल्लाहुल लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व अल-मलिकुल क़ुद्दूसुस सलामुल मु-मेनुल मु-हयमेनुल अज़ीज़ुल जब्बारुल मु-त-कब्बिरो सुब्हानल्लाहि

अम्मा युशरेकून0 हुवल्लाहुल ख़ालिकुल बारिउल मुसव्विरो लहुल असमाउल हुस्ना युसब्बेहु लहू माफ़िस स-म-वाति वल अर्द व-हुवल अज़ीज़ुल हकीम0

एक मरतबा

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

क़ुल या अय्युहल काफ़ेरून0 ला आबुदु मा ताअ़बुदू न0 व ला अनतुम आ़बिदू न मा अ़अ़बुद0 वला अ न आ़बिदुम मा अ बत्तुम0 वला अनतुम आ़बिदू न मा आ़बुद0 लकुम दीनुकुम वलि य दीन0

तीन मरतबा

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

क़ुल हु वल्लाहु अहद0 अल्लाहुस समद0
लम यलिद0 वलम यूलद0 वलम
यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद0

एक मरतबा

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़्कि0 मिन शर्रे
मा ख़ लक़0 व मिन शर्रे ग़ासिक़्किन इज़ा
वक़बब0 व मिन शर्रिन नफ़्फ़ासाति फ़िल
ओक़दि0 व मिन शर्रि हासिदिन इज़ा
हसद0

एक मरतबा

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नासि0
मलिकिन्नासि0 इलाहिन्नासि0 मिन शर्रिल
वस्वासिल ख़न्नासिल0 लज़ी यु वस्विसु
फ़ी सुदूरिन्नासि0 मिनल जिन्नति वन्नास0

एक मरतबा

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ-ल-मीन0
अर्रहमानिर्रहीम0 मालिके यौमिद्दीन0
इय्या-क नअ्बुदु व इय्या-क नस्तईन0
इह्दिनस्सिरातल मुस्तक़ीम0

सिरातल्लज़ी-न-अन अम्-त अलैहिम
ग़ैरिल मग़दूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन०

एक मरतबा

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अलिफ़ लाम मीम० ज़ालिकल किताबु
ला रय-ब फ़ीह० हुदल लिल मुत्तक़ीनल
लज़ी-न यू-मेनू-न बिलग़ैबि व यु-
क़ीमूनस्सला-त व मिम्मा रज़क़ना हुम
युनफ़िक़ून० वल्लज़ी-न यु-मिनू-न बिमा
उनज़े-ल इलै-क वमा उनज़े-ल मिन
क़बलिक व बिल आख़िरति हुम यू-
क़िनून० उलाइ-क अला हुदम मिर्रब्बिहिम
व उलाइ-क हुमुल मुफ़लिहून०

व इलाहुकुम इलाहुंव वाहिद ला इलाहा
इल्ला हुवर्रहमानुर रहीम० इन-न
रहमतल्लाहि क़रीबुम मिनल मुहसिनीन०
वमा अरसलना-क इल्ला रह-मतल लिल
आ-लमीन० फ़रव-हुंव व रैहानुंव व
जन्नतु नईम० मा-का-न मुहम्मदुन अबा
अ-ह-दिम मिर रिजालिकुम व-लकिर
रसूलल्लाहे व ख़ातमन नबियीन० व का-
नल्लाहु बिकुल्लि शयइन अलीमा०
इन्नल्ला-ह व मलाइ-क-तहू युसल्लू-न
अलन्नबीये० या अय्युहल्लज़ी-न आ-मनू
सल्लू अलैहे वसल्लिमू तसलीमा०
अल्लाहुम-म सल्ले अला सय्येदेना
मुहम्मदिंव व अ़ला आले सय्येदेना

मुहम्मदिंव व बारिक व सल्लिम0 सुब्हा-
न रब्बि-क रब्बिल इ़ज़्ज़ति अम्मा य-
सेफ़ून0 व सलामुन अलल मुरसलीन0
वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ-लमीन0

बख़्शने की तरकीब

क़ुरआन शरीफ़ या वज़ाइफ़ या औरादे मुतबरिक्का या दीगर किसी चीज़ का सवाब पहले ख़ुदाए तआ़ला की नज़र करे। बाद किसी ही पैग़म्बर को क्यों न हो मुन्दर्जा ज़ैल तरकीब से पहुंचा दे-

या बारी तआ़ला, जो कुछ मैंने क़ुरआन शरीफ़ या दीगर औरादे मुतबरिक्का के पढ़े या

शीरनी या जो कुछ कि तआ़म वग़ैरह या अश्या हाज़िर शुदा हैं, उन तमाम का नाम लेकर तुफ़ैल से या अल्लाह तेरे इन पैग़म्बर की अरवाहे पाक में बख़्श दे।

अगर किसी औलिया अल्लाह के नाम पर बख़्शना है तो यूं कहे- या अल्लाह, मैं तेरे नज़र करता हूँ पस हज़रत रिसालत पनाह सल्लल लाहो अलैहे वसल्लम के तुफ़ैल फ़लाने औलिया अल्लाह के नाम पर बख़्श दे। अगर किसी बुज़ुर्गाने दीन पर हो या मुर्दगां के नाम पर हो तो यूं बख़्शे- या अल्लाह तेरे नज़र करते हुए तुफ़ैल से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल लाहो अलैहे वसल्लम के और वसील से हज़रत महबूबे सुब्हानी अब्दुल क़ादिर जीलानी

रहमतुल्लाह अलैह के फ़लाने बुज़ुर्ग की रूह को या फ़लाने मुरीद की रूह को इसका सवाब बख़्श दे। यह सब बख़्शने के बाद **अल्लाहो अकबर** तीन बार या पाँच बार पढ़कर यह पढ़ें-

इन्नल्ला-ह व मलाइ-क-तहू युसल्लू-न अलन्नबीये० या अय्युहल्लज़ी-न आ-मनू सल्लू अलैहे वसल्लिमू तसलीमा० अल्लाहुम-म सल्ले अला सय्येदेना मुहम्मदिंव व अ़ला आले सय्येदेना मुहम्मदिंव व बारिक व सल्लिम० सुब्हा-न रब्बि-क रब्बिल इ़ज़्ज़ति अम्मा य-सेफ़ून० व सलामुन अलल मुरसलीन० वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ-लमीन०

ज़िबह का बयान

ज़िबह से जानवर का गन्दा ख़ून आसानी से निकल जाता है। जिसके बाद ज़बीहा पाक और हलाल जानवर का गोश्त खने के क़ाबिल हो जाता है।

ज़िबह का तरीक़ा- ज़िबह का तरीक़ा यह है कि पहले जानवर को पानी पिलाकर बायें पहलू पर लिटाएं। इस तरह के सर जुनूब और मुंह क़िबला की तरफ़ रहे। या इसी तरतीब से हाथ में पकड़ें। फिर दायें हाथ में तेज़ छुरी लेकर **बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर** कहकर क़ुव्वत व तेज़ी के साथ गले पर घांटी के नीचे छुरी चलाएं। इस अन्दाज़ पर कि चारों रगें कट जाएं,

लेकिन सर जुदा न हो। काटना ख़त्म होते ही जानवर को छोड़ दें। जब ज़बीह ठण्डा हो जाए तो उसकी खाल वग़ैरह निकालें। ठण्डा होने से क़ब्ल उसकी खाल निकालना या सर जुदा करना मकरूह है।

मसअला- अगर कोई शख़्स ज़िबह के वक़्त **बिस्मिल्लाह** इत्तेफ़ाक़न भूल गया तो भी वह जानवर हलाल होगा। हाँ अगर जान बूझकर नहीं पढ़ा तो हराम होगा।

मसअला- जिस मुसलमान को ज़िबह करने का तरीक़ा मालूम है उसने ज़िबह कर दिया तो उसके हाथ का ज़बीहा हलाल होगा।

मसअला- बिस्मिल्लाह कहना और गरदन की चार रगें काटना फ़र्ज़ है।

मसअला- अगर कोई हलाल जानवर ज़िबह करने के वक़्त कुएं या किसी गढ्डे में गिर गया। अब वह क़ाबू से बाहर हो तो **बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर** पढ़कर उसे तीर या नेज़े से ज़ख़्मी कर दे, जहाँ भी लगे। और फिर जब उसे निकालकर बाहर लाए तो बाक़ायदा ज़िबह करे।

मसअला- शिकारी जंगलों में शिकार करते हैं। जानवर को तीर या नेज़े से शिकार करते वक़्त **बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर** कहकर तीर या नेज़ा मारे। जानवर ज़ख़्मी हुआ, लेकिन दूर जाकर गिर गया। अब उसे मिलते ही फ़ौरन बाक़ायदा ज़िबह कर दे। ख़ून निकल जाना ज़रूरी है। और अगर वह दूर भागा लेकिन ज़िन्दा नहीं मिला तो भी जायज़ है।

मसअला- बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर कहे बग़ैर बन्दूक़ से उसे मारा वह ज़ख़्मी होकर दूर जा गिरा या डण्डे और लाठियों से उसे मारा और मार-मारकर बेजान कर दिया यहाँ तक कि वह मरने तक आ गया। अब अगर फ़ौरन बाक़ायदा ज़िबह कर दिया तो जायज़ है वरना वह जायज़ न होगा।

मसअला- ऊँट के ज़िबह करने को **नहर** करना कहते हैं। ऊँट को गिराकर ज़िबह करना दीगर जानवरों की तरह बहुत मुश्किल है। शरीअ़त ने यह तरीक़ा बताया है कि पहले उसे नेज़े मार-मारकर गिरा दें। जब वह गिर जाए तो बाक़ायदा **बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर** पढ़कर उसे ज़िबह करें। (किसी और जानवर को नहर करना मकरूह है।)

हलाल जानवर और परिन्दों की मुख़्तसर फ़ेहरिस्त

बकरियां, मछलियां, दुंबा, मुर्ग़, मुरग़ाबियां, भेड़ें, हुदहुद, चौपाए, हरियल, मैना, अबाबील, क़मरी, चिड़ियां, चिकारा, बया, बतख़, तोता, तोती, शतुरमुर्ग़, कबूतर, क़ाज़ कोयल, लाल वग़ैरह।

हलाल जानवर में हराम मगज़ भी होता है। उसका खाना जायज़ नहीं। नेज़ बुतों पर चढ़ा हुआ या चोरी का जानवर जायज़ नहीं। वाज़ह रहे कि बड़े-बड़े शहरों में रोज़ाना हज़ारों जानवर ज़िबह होते हैं अगर दिल मुतमइन हो तो खा लेना चाहिए वरना नहीं।

क़ुर्बानी

इबादत की नियत से मख़सूस अय्याम में मख़सूस जानवर के ज़िबह करने का नाम क़ुर्बानी है।

क़ुर्बानी की अहादीस में बड़ी फ़ज़ीलत आई है। क़ुर्बानी करने से ज्योंही क़ुर्बानी के ख़ून का पहला क़तरा ज़मीन पर गिरता है, साहिबे क़ुर्बानी के गुनाह माफ़ हो जाते हैं। और क़ुर्बानी के जानवर के एक-एक बाल बल्कि हर रोंगटे के ऐवज़ एक-एक नेकी मिलती है। जिस घर में क़ुर्बानी होती है वह घर साहिबे क़ुर्बानी के लिए दुआ़ करता है। जिस की बदौलत घर में अमन व

अमान और आसाइश रहती है। और साहिबे ख़ाना के माल में बरकत होती है। क़ुर्बानी करना हर आज़ाद व मुक़ीम साहिबे निसाब मुसलमान पर वाजिब है। ग़ुलाम, मुसाफ़िर और मोहताज पर वाजिब नहीं।

बड़े जानवर में सात हिस्से हो सकते हैं। छोटे जानवर मसलन बकरियां वग़ैरह एक हिस्सा। मुर्ग़ियों की क़ुर्बानी नहीं हो सकती। ईदुलज़ुहा के मौक़े पर दस तारीख़, ग्यारह और बारह तारीख़ तक क़ुर्बानी हो सकती है। गोश्त में तीन हिस्से करें। एक अपने लिए, एक दोस्त अहबाब के लिए और एक हिस्सा ग़रीबों और मोहताजों में तक़सीम कर दें।

मसाइले क़ुर्बानी

मसअला- क़ुर्बानी के अय्याम में क़ुर्बानी ही करना ज़रूरी है। कोई दूसरी चीज़ इसके क़ायम मुक़ाम नहीं हो सकती। मसलन बजाए क़ुर्बानी के जानवर या उसकी क़ीमत सदक़ा कर देना काफ़ी नहीं।

मसअला- बकरी, बकरा, भेड़ व दुंबा कम-से-कम एक साल का हो, उससे कम का जायज़ नहीं। हाँ दुंबा या भेड़ का बच्चा अगर छः माह का ख़ूब फ़रबा हो कि देखने में एक साल का मालूम हो तो जायज़ है। लेकिन बकरा एक साल से एक दिन भी कम हो तो क़ुर्बानी नहीं होगी।

(बहारे शरीअ़त)

मसअला- क़ुर्बानी करने वाले के लिए चाँद देखकर क़ुर्बानी करने तक सर न मुण्डाना, बाल न तरशवाना, नाख़ून न कटवाना मुसतहिब है।

मसअला- रात में ज़िबह करना मकरूह है।

मसअला- एक जानवर के सामने दूसरे जानवर को ज़िबह करना मकरूह है।

मसअला- जहाँ नमाज़ ईद होती है वहाँ नमाज़े ईद से पहले क़ुर्बानी दुरुस्त नहीं।

मसअला- जिस गाँव में ईद की नमाज़ न होती हो वहाँ के लोग दसवीं तारीख़ आफ़ताब तुलुअ होते ही क़ुर्बानी कर सकते हैं।

मसअला- अगर इन तारीख़ों में किसी वजह से क़ुर्बानी न की जा सकी तो क़ुर्बानी का जानवर

ख़ैरात कर दें। (अगर जानवर ख़रीदा न हो तो उसकी क़ीमत ख़ैरात कर दें।)

नीयते क़ुर्बानी

इन्नी वज्जहतो वजहिया लिल्लज़ी फ़-त-रस्समावाते वल अरज़ हनीफ़ंव वमा अ-न मिनल मुशरेकीन0 इन-न सलाती व नुसुकी व महया-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आ-लमीन0 ला-शरी-क लहू व बे ज़ाले-क उमिरतु व अ-न मिनल मुस्लिमीन0 अल्लाहुम्मा मिनका व ल-क बिस्मिल्लाहि अल्लाहो अकबर0

पढ़कर ज़िबह करें। ज़िबह के बाद अगर अपनी तरफ़ से क़ुर्बानी की है तो इस तरह कहें-

अल्लाहुम-म तक़ब्बलहु मिन्नी कमा तक़ब्बल-त मिन ख़लीलि-क इबराही-म व हबीबि-क मुहम्मदिन अलैहिमस्सलातो वस्सलाम0

नोट- अगर किसी दूसरे के नाम से करे तो लफ़्ज़ **मिन्नी** की जगह **मिन फ़ुलाने इब्ने फ़ुलाने** कहे। मसलन अगर किसी का नाम ज़ैद है और ज़ैद के वालिद का नाम उमर है तो इस तरह कहे-

अल्लाहुम-म तक़ब्बलहु मिन ज़ैदे इब्ने उमर कमा तक़ब्बल-त.....

अक़ीक़ा के मसाइल

मसअला- (इस्तलाह शरअ में) बच्चा पैदा होने के बाद (उस के सर से बाल उतार कर) जो

बकरा ज़िबह किया जाता है उसको अक़ीक़ा कहते हैं।

मसअला- अक़ीक़ा पैदाइश के सातवें दिन करना चाहिए। अगर सातवें दिन न हो सके तो चौदहवें दिन या इक्कीसवें दिन या जब मुमकिन हो करें। लेकिन सातवें दिन का लिहाज़ रखें। इसके लिए उम्र की कोई क़ैद नहीं है। अलबत्ता सातवें दिन से पहले करना दुरुस्त नहीं है।

मसअला- लड़की का अक़ीक़ा एक बकरे से और लड़के का दो बकरों से करना चाहिए। अगर किसी में दो बक्रों की क़ुदरत न हो तो एक बकरा भी काफ़ी है।

मसअला- अक़ीक़ा का जानवर बच्चे का बाप

ख़ुद ज़िबह करे तो बेहतर है वरना चचा, दादा या जो चाहे ज़िबह करे। ज़िबह के वक़्त यह दुआ पढ़ें-

दुआए अक़ीक़ा

अल्लाहुम-म हाज़िही अक़ीक़तु इब्नी (फ़लां) दमुहा बि-दमिही व लहमुहा बि-लहमिही व अज़मुहा बि-अज़मिही व जिल्दुहा बि-जिल्दिही व शअरुहा बि-शअरिही अल्लाहुम-म तक़ब्बलहा मिन्नी फ़िदाअल लइब्नी मिनन्नार०

फिर **बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर** कहकर ज़िबह करे।

तंबिहा- अगर लड़के का बाप ख़ुद ज़िबह करे तो

लफ़्ज़न लफ़्ज़न यह दुआ पढ़े, अलबत्ता लफ़्ज़े (फ़लां) की जगह लड़के का नाम ले और अगर लड़की हो तो **इब्नी** की जगह **बिन्ती** कहे और मुज़क्किर ज़मीरों की जगह मोअन्निस ज़मीरें कहता जाए- मसलन **दमुहा बि-दमिहि** की जगह **दमुहा बि-दमिहा** और **लहमुहा बि-लहमिहि** की जगह **लहमुहा बि-लहमिहा** वग़ैरह। अगर कोई दूसरा शख़्स ज़िबह करे तो **इब्नी फ़लां** की जगह **इब्ने फ़लां** कहे। यानी बच्चे का और बच्चे के बाप का नाम ले। और **तक़ब्बलहा मिन्नि** की जगह **तक़ब्बलहा मिन्हो** और **फ़िदाअल लिइब्नी** की जगह **फ़िदाअल लिइब्नेही** और लड़की के लिए **बिन्ती** के बजाए **बिन्ते फ़लां** कहे और मोअन्निस ज़मीरें इस्तेमाल करें।

अक़ीक़ा का जानवर ज़िबह करने के साथ ही साथ बच्चे के सर के बाल उतार दें और सर पर ज़ाफ़रान या सन्दल या और कोई ख़ुश्बूदार चीज़ मलें। और बालों को सोने या चाँदी से तोल कर बाल ज़मीन में दफ़न कर दें और वह सोना या चाँदी ख़ुदा के नाम ख़ैरात करें। (हज्जाम को उजरत में न दें बल्कि उसको अलैहदा से कुछ दे दें।) फिर उसी दिन बच्चे का नाम रखें (कि पैदाइश के सातवें दिन नाम रखना सुन्नत है) अक़ीक़े के गोश्त के तीन हिस्से किये जाएं। एक हिस्सा फ़क़ीरों और मोहताजों को दिया जाए। बाक़ी दो हिस्से आप खाएं और अपने अज़ीज़ों और हमसायों में (कच्चा ख़्वाह पकाकर) तक़सीम करें।

तंबिया- क़ुर्बानी और अक़ीक़ा दोनों का हुक्म यक्सां है। पस जिस तरह क़ुर्बानी का गोश्त साहिबे क़ुर्बानी खा सकता है उसी तरह अक़ीक़े का गोश्त माँ, बाप, नानी, नाना, दादी, दादा सब खा सकते हैं। कोई शरई मुमानिअ़त नहीं है।

रात को सोते वक़्त के अमलियात

हुज़ूर अक़दस सल्लल लाहो अलैहे वसल्लिम ने एक मरतबा अली करम अल्लाह वजहु से इरशाद फ़रमाया कि ऐ अली रात को रोज़ाना पाँच काम करके सोया करो।

1. चार हज़ार दीनार सदक़ा देकर सोया करो
2. एक क़ुरआ़न शरीफ़ पढ़कर सोया करो।
3. जन्नत की क़ीमत देकर सोया करो।
4. दो लड़ने वालों में सुलह कराकर सोया करो।
5. एक हज करके सोया करो।

हज़रत अली ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह यह अमर मुहाल है मुझसे कब बन सकेंगे। फिर हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया-

1. चार मरतबा सूरह फ़ातेहा पढ़कर सोया करो इसका सवाब चार हज़ार दीनार के बराबर है।

2. तीन मरतबा **क़ुल हुवल लाहो अहद** पढ़कर सोया करो इसका सवाब एक क़ुरान मजीद के बराबर होगा।

3. दस मरतबा **अस्तग़फ़ार** पढ़कर सोया करो दो लड़ने वालों में सुलह कराने के बराबर सवाब होगा।

4. दस मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़कर सोया करो जन्नत की क़ीमत अदा होगी।

5. तीसरा कलमा पढ़कर सोया करो एक हज का सवाब मिलेगा।

इस पर हज़रत अली करम अल्लाह वजहु ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह सल्लल लाहो अलैहे वसल्लिम अब तो मैं रोज़ाना यही अमलियात करके सोया करूंगा।

Z&Z Graphics, Ajmer. # 94143-79750